

आओ संवाद करें शान्ति की बात करें

शांति निर्माण बाल पत्रिका

संकलन एवं डिज़ाइन : अनिमेष विलियम्स





निदेशक संदेश



**प्रिय शांति क्लब के बच्चों ,
अभिवादन**

प्रिय शांति क्लब के बच्चों,
स्नेहपूर्ण अभिवादन!

मुझे आशा है कि यह संदेश आप सभी को अच्छे स्वास्थ्य और उमंग से भरे दिनों में प्राप्त होगा। मैं आप सभी के प्रति अपने हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और संवाद शांति निर्माण और सुलह कार्यक्रम के माध्यम से समुदायों में शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के आपके समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।

आप सभी एक उज्ज्वल भविष्य के पथप्रदर्शक हैं, और विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बीच समझ और सम्मान को बढ़ावा देने में आपकी सक्रिय भागीदारी वास्तव में प्रेरणादायक है। आपके प्रयास शांति और एकता का माहौल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और आपके आसपास के लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं।

शांति क्लब के सदस्य होने के नाते, आपने पहले ही असाधारण नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया है। मैं आपको सीखने, आगे बढ़ने और एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए प्रेरित करता हूँ जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बने। यह मंच आपके लिए प्रश्न पूछने, मार्गदर्शन प्राप्त करने और अपने भविष्य के रास्तों की कल्पना करने का अवसर प्रदान करता है।

मुझे आप सभी की क्षमताओं पर पूरा भरोसा है और विश्वास है कि आपमें से हर कोई इस दुनिया में एक सकारात्मक बदलाव लाने की शक्ति रखता है। अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रयासरत रहें, शांति और सद्भाव के महत्व को हमेशा अपने हृदय में संजोकर रखें।

मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तक आपको एक प्रभावी शांति दूत बनने में मार्गदर्शन देगी और आपके इरादों को सफल बनाने में सहायक होगी।।

शुभकामनाओं वा हार्दिक सम्मान के साथ,
फादर एंटोनी फर्नांडेस ,
कारितास इंडिया ,नई दिल्ली



सह -निदेशक संदेश

**प्रिय शांति क्लब के बच्चों ,
अभिवादन**

मुझे आशा है कि यह संदेश आप सभी को अच्छे स्वास्थ्य और बेहतर दिनों में पाएगा। मैं अपने दिल से आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ और आपके समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो संवाद, शांति निर्माण और सुलह कार्यक्रम के माध्यम से आप समुदायों में शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए कर रहे हैं।

मैं संवाद, शांति निर्माण और सुलह कार्यक्रम के माध्यम से अपने समुदायों के भीतर शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए आपके समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए अपनी हार्दिक प्रशंसा व्यक्त करता हूँ और बताना चाहता हूँ कि आप एक उज्ज्वल भविष्य के पथप्रदर्शक हैं, और विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के बीच समझ और सम्मान को बढ़ावा देने में आपकी सक्रिय भागीदारी वास्तव में प्रेरणादायक है। शांति और एकता का माहौल बनाने के आपके प्रयास आपके आसपास के लोगों के जीवन में वास्तविक बदलाव ला रहे हैं। शांति क्लब के सदस्यों के रूप में, आपने पहले ही असाधारण नेतृत्व गुण दिखाए हैं। मैं आपको सीखने, बढ़ने और अनुकरणीय व्यक्ति बनने के इस अवसर को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित कर सके। प्रश्न पूछने, मार्गदर्शन प्राप्त करने और उन रास्तों की कल्पना करने के लिए इस मंच का उपयोग करें जिन पर आप चलना चाहते हैं। मुझे आपकी क्षमताओं पर बहुत भरोसा है और विश्वास है कि आप में से प्रत्येक के पास दुनिया में सकारात्मक प्रभाव पैदा करने की क्षमता है। इस क्षण को थाम लें, अपने सपनों को गले लगाएं और शांति और सद्भाव के महत्व को कभी न भूलें।

मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तक आप सभी का शांति दूत की भूमिका में उचित मार्ग दर्शन करेगी और आपके इरादों को कामयाब करेगी।

**शुभकामनाओं वा हार्दिक सम्मान के साथ,
फादर अनिल क्रास्टा ,
कारितास इंडिया ,नई दिल्ली**

विषय सूची

1. हिंसा	1
2. सांप्रदायिक हिंसा	2
3. साम्प्रदायिक हिंसा से सामना	3
4. अकरम की कहानी	4
5. टकराव क्या है	5
6. संघर्ष का जंगल और शांति के बच्चे	6
7. टकराव से निपटना	7
8. दो जिगरी दोस्तों की कहानी	8
9. दोस्ती का इम्तेहान	9
10. दोस्ती	9
11. भारत की आज़ादी के स्वतंत्रता सेनानियों की अमर गाथा	10
12. भारत का संविधान	11
13. प्रश्नोत्तरी	12



हिंसा

हिंसा शारीरिक बल का उपयोग घायल करने, दुर्व्यवहार, क्षति या नष्ट करने के लिए है। हिंसा के कारण होने वाली चोट शारीरिक, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक हो सकती है। एक सख्त अर्थ में, हिंसक व्यवहार के परिणाम अपमान, संकट और अवसाद जैसी मानसिक चोटों को भी जन्म दे सकते हैं।

समाज में हिंसा की उपस्थिति के कारण दुनिया के अधिकांश राष्ट्रों की शांति और समृद्धि को कम या ज्यादा हद तक बाधित किया गया है। कई रूपों में हिंसा को रोका जा सकता है।

हिंसा को मुख्य रूप से पाँच प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. **व्यक्तिगत हिंसा** - व्यक्तियों द्वारा अपनी व्यक्तिगत क्षमता में की गई व्यक्तिगत हिंसा को व्यक्तिगत हिंसा कहा जाता है
2. **सामूहिक हिंसा** - इसे "भीड़ की हिंसा" कहा जा सकता है।
3. **साम्प्रदायिक हिंसा** - अंतर-समुदाय या अंतर-धार्मिक विवाह, क्षुद्र झगड़े, ताने के माध्यम से एक समुदाय की भावना को छूना, और अनुचित आलोचना हो सकती है।
4. **धार्मिक हिंसा** - धार्मिक कारणों से

राजनीतिक हिंसा - राजनीतिक लाभ के वोट के लिए राजनीति का अपराधीकरण।

भारतीय संविधान शांति और धार्मिक सद्भाव का समर्थन और प्रोत्साहन करता है। शांति वह मार्ग है जिसे हम समाज में विकास और समृद्धि लाने के लिए अपनाते हैं। यदि हमारे पास शांति और सद्भाव नहीं है, तो राजनीतिक ताकत, आर्थिक स्थिरता और सांस्कृतिक विकास हासिल करना असंभव होगा। लेकिन धार्मिक हिंसा के मामले में भारत दुनिया का चौथा सबसे खराब देश है।

सांप्रदायिक हिंसा



भारतीय संविधान धार्मिक सद्भाव का समर्थन और प्रोत्साहन करता है। लेकिन धार्मिक हिंसा के मामले में भारत दुनिया का चौथा सबसे खराब देश है। सांप्रदायिक हिंसा तब होती है जब विभिन्न धार्मिक समुदायों के लोग एक-दूसरे के खिलाफ संगठित होते हैं और शत्रुता, भावनात्मक रोष, शोषण, सामाजिक भेदभाव या सामाजिक उपेक्षा की भावनाओं का अनुभव करते हैं। यह मुख्य रूप से घृणा, शत्रुता और प्रतिशोध से प्रेरित है। आजादी से पहले और बाद में, भारत में कई दंगे हुए हैं।

सांप्रदायिक दंगे धर्म से ज्यादा राजनीति से प्रेरित होते हैं। राजनीतिक हितों के अलावा, आर्थिक हित सांप्रदायिक संघर्षों में भारी योगदान देते हैं। इस तरह के दंगे दक्षिण और पूर्वी भारत की तुलना में उत्तर भारत में अधिक आम प्रतीत होते हैं। अधिकांश सांप्रदायिक दंगे धार्मिक त्योहारों के अवसर पर होते हैं। यह अधिक संभावना है कि सांप्रदायिक दंगे फिर से उस शहर में होंगे जो पहले से ही एक या दो बार अनुभव कर चुके हैं, उस शहर की तुलना में जिसने उन्हें कभी अनुभव नहीं किया है। भारत ने 2016 और 2020 के बीच सांप्रदायिक या धार्मिक दंगों के 3,399 मामलों को देखा।

बूझो तो जाने

प्रश्न 1) 1857 के विद्रोह में तात्या टोपे की क्या भूमिका थी?

- a. वह नाना साहब की सेना का प्रधान सेनापति था
- b. उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ पंचमहल क्षेत्र के भीलों को संगठित किया।
- c. a और b दोनों
- d. न तो a न ही b

प्रश्न 2) 1857 के विद्रोह के दौरान गवर्नर-जनरल कौन था?

- a. लॉर्ड कैनिंग
- b. लॉर्ड इरविन
- c. लॉर्ड लिटन
- d. लॉर्ड विलिंगटन



साम्प्रदायिक हिंसा से सामना



भारत में सांप्रदायिक हिंसा का एक पीड़ित रोहन नाम का एक युवा लड़का था। वह केवल छह साल का था जब उसके गांव पर चरमपंथियों की भीड़ ने हमला किया था। रोहन और उसके परिवार को सिर्फ इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि वे मुस्लिम बाहुल्य इलाके में रहने वाले हिंदू थे। हमलावरों ने उनके घर में आग लगा दी और अराजकता में रोहन अपने माता-पिता से बिछड़ गया।

भयभीत और अकेला, रोहन घंटों तक सड़कों पर भटकता रहा, इससे पहले कि वह एक दयालु अजनबी से मिला, जो उसे पास के राहत शिविर में ले गया। रोहन के लिए शिविर में जीवन कठिन था, और वह अक्सर डरा हुआ और अपने माता-पिता के बिना अकेला महसूस करता था। आघात का अनुभव करने के बावजूद, रोहन ने अविश्वसनीय लचीलापन और ताकत दिखाई। उसने शिविर में अन्य बच्चों के साथ दोस्ती की और खेल खेलने और कहानियाँ सुनाने में उसे आराम मिला। आखिरकार, रोहन अपने माता-पिता से मिला, जो हमले में बाल- बाल बचे थे। साथ में, उसने अपने जीवन का पुनर्निर्माण करना और अपने लिए एक नया घर बनाना शुरू किया।

रोहन की कहानी मासूम बच्चों पर सांप्रदायिक हिंसा के विनाशकारी प्रभाव की दुखद याद दिलाती है। हालांकि वह हमले में बच गया, लेकिन जो आघात उन्होंने सहा वह जीवन भर उसके साथ रहेगा।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. रोहन को हमलावरों ने क्यों निशाना बनाया ?
2. हमले के बाद रोहन के साथ क्या घटना घटी ?
3. रोहन को कौन मिला और वह उसे कहाँ ले गया ?
4. रोहन हमले से हुए नुकसान से उबरा या नहीं और अंत में उसने क्या किया ?
5. इस कहानी से हमें क्या सीखने को मिलता है ?

अकरम की कहानी

गोधरा हिंसा का एक उत्तरजीवी अकरम नाम का एक युवा लड़का था। वह उस समय केवल 10 वर्ष का था और अपने परिवार के साथ ट्रेन में यात्रा कर रहा था जब धार्मिक चरमपंथियों की भीड़ ने उन पर हमला किया। अकरम और उनका परिवार मुसलमान था और उन्हें केवल उनके धर्म के कारण निशाना बनाया गया। हमलावरों ने ट्रेन में आग लगा दी और अकरम के माता-पिता की आग में जलकर मौत हो गई। वह अपने भाई-बहनों से बिछड़ गया था और अपनी देखभाल के लिए अकेला रह गया था।

आघात और तबाही के अनुभव के बावजूद, अकरम जलती हुई ट्रेन से बचने में कामयाब रहा और सुरक्षा के लिए अपना रास्ता बना लिया। उसे एक दयालु परिवार द्वारा लिया गया जिसने उसकी चोटों और आघात से उबरने में उसकी मदद की थी। हालांकि अकरम गोधरा हिंसा से बच गया, लेकिन उसके माता-पिता की मृत्यु और उसके द्वारा सहे गए आघात ने उन पर स्थायी प्रभाव छोड़ा। उसकी कहानी हिंसा के मानव हानि और संकट के समय करुणा और दया के महत्व की दुखद याद दिलाती है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. हिंसा के समय अकरम की क्या उम्र थी ?
2. हमले के बाद अकरम के साथ क्या हुआ ?
3. अकरम की कहानी क्या याद दिलाती है ?

क्या आप
जानते हैं



सांप्रदायिक हिंसा का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसमें शारीरिक नुकसान और विस्थापन से लेकर भावनात्मक आघात और दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक क्षति तक के प्रभाव होते हैं। साम्प्रदायिक हिंसा का अनुभव करने वाले बच्चे चिंता, अवसाद और तनाव विकार से पीड़ित हो सकते हैं, और वे विश्वास, रिश्तों और सामाजिक संबंधों के साथ संघर्ष कर सकते हैं। इसके अलावा, सांप्रदायिक हिंसा बच्चों की शिक्षा और विकास को बाधित कर सकती है, गरीबी और नुकसान के चक्र को कायम रख सकती है।

टकराव क्या है

टकराव व्यक्तियों, समूहों या राष्ट्रों के बीच असहमति या विरोध की स्थिति है। यह रुचियों, विश्वासों, मूल्यों या आवश्यकताओं में अंतर के कारण उत्पन्न हो सकता है और इसके कई रूप हो सकते हैं, जिनमें शामिल हैं:

- व्यक्तिगत
- पारिवारिक
- सामाजिक
- सामुदायिक
- धार्मिक



टकराव जीवन की सच्चाई है। भगवान ने हम में से प्रत्येक को अद्वितीय बनाया है। इसलिए हमारे कुछ विचार और विचार दूसरों से भिन्न होंगे। संघर्ष अक्सर एक दूसरे की जरूरतों और विचारों के प्रति सम्मान की कमी के कारण होता है।

संघर्ष का जंगल और शांति के बच्चे

एक बार, एक दूर देश में, दो पड़ोसी राज्य थे जो एक विशाल जंगल से अलग हो गए थे। दोनों राज्यों के लोग कई वर्षों तक शांति से रहे थे कि एक दिन जंगल के स्वामित्व को लेकर विवाद हो गया। दोनों राज्यों के राजाओं ने संघर्ष को शांति से सुलझाने की कोशिश की, लेकिन उनके प्रयास विफल रहे और तनाव बढ़ता रहा। दोनों राज्यों के लोग भयभीत और क्रोधित होने लगे और जल्द ही विवाद एक पूर्ण युद्ध में बदल गया। जैसे-जैसे संघर्ष बढ़ता गया, कई लोगों ने अपने घरों, प्रियजनों और यहाँ तक कि अपने जीवन को भी खो दिया।



संघर्ष का जंगल और शांति के बच्चे जारी.....

एक दिन दोनों राज्यों के बच्चों का एक समूह जंगल के बीच में एक दूसरे से मिला। वे वर्षों से वहाँ खेला करते थे और हमेशा दोस्त बने रहे, भले ही वे अलग-अलग राज्यों से थे। बच्चे जंगल को उजड़ते और अपने प्रिय लोगों को आपस में लड़ता देखकर दुखी थे। उन्होंने अपनी भूमि में शांति लाने के लिए कार्रवाई करने का फैसला किया। वे अपने राजाओं के पास गए और उनसे लड़ाई बंद करने और संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान खोजने की विनती की।

राजाओं ने बच्चों की बात सुनी और उनकी मासूम और हार्दिक दलीलों से प्रभावित हुए। अंत में, राजा मिलने और बात करने के लिए तैयार हो गए, और कई लंबी और कठिन वार्ताओं के बाद, वे एक शांतिपूर्ण समाधान पर पहुंचने में सफल रहे। जंगल बहाल हो गया, और दोनों राज्यों के लोग एक बार फिर से सद्भाव में रहने लगे। उस दिन से, बच्चों को उनकी भूमि पर शांति लाने में उनकी बहादुरी और ज्ञान के लिए नायक के रूप में मनाया जाने लगा। उन्होंने सीखा कि संघर्ष के बीच भी, दोस्ती और करुणा बनी रह सकती है, और यह कि बच्चों की आवाज़ें परिवर्तन की शक्तिशाली एजेंट हो सकती हैं।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. जंगल के दोनों राज्यों में किस बात को लेकर विवाद हो गया?
2. क्या राजाओं ने इस संघर्ष को शांति से निपटाने की कोशिश की थी ?
3. सभी बच्चों ने क्या फैसला लिया ?
4. क्या बच्चों द्वारा किया गया प्रयास सफल रहा ?
5. इस कहानी से हमें क्या सीखने को मिलता है ?



टकराव से निपटना

समूह के भीतर संघर्षों से निपटने के सामान्य तरीके

- **टालना** - संघर्ष की स्थिति से पीछे हटना, इसे मौका देना।
- **सामंजस्य** - आम तौर पर मतभेदों को कवर करते हैं और दावा करते हैं कि चीजें ठीक हैं।
- **समझौता** - समझौता करने के लिए बातचीत करना, दोनों पक्षों द्वारा लाभ के लिए सौदेबाजी करना
- **दबाव डालना** - किसी नेता या बहुमत द्वारा किए गए निर्णय को स्वीकार करने के लिए किसी पार्टी को जोर देना।
- **समस्या-समाधान** - मतभेदों का सामना करना और उन्हें सहयोगात्मक आधार पर हल करना।

दो जिगरी दोस्तों की कहानी



एक बार की बात है, एक छोटे से गाँव में, दो अच्छे दोस्त रहते थे, रवि और राधा। वे एक साथ बहुत समय बिताते थे और खेल खेलने और गाँव की खोजबीन करने का आनंद लेते थे।

एक दिन खेलते-खेलते किसी खिलौने को लेकर दोनों में झगड़ा हो गया। कहासुनी मारपीट में बदल गई और दोनों ने एक दूसरे से बात करने से इंकार कर दिया। वे कई दिनों तक एक-दूसरे से बचते रहे और ऐसा लगा कि उनकी दोस्ती मुश्किल में पड़ गई है।

एक शाम रवि के दादाजी ने उसे अकेले बैठे और उदास देखा। जब उसने उससे पूछा कि क्या बात है, तो रवि ने उसे राधा के साथ हुए झगड़े के बारे में बताया। उसके दादाजी ने धैर्य से सुना और फिर उसे एक कहानी सुनाई।



कहानी

"एक बार, एक राजा था जो एक शांतिपूर्ण राज्य पर शासन करता था। एक दिन, भूमि के एक टुकड़े पर दो पड़ोसी राज्यों के बीच विवाद पैदा हो गया। दोनों राज्यों ने भूमि को अपना होने का दावा किया, और वे इस पर युद्ध करने के लिए तैयार थे। बुद्धिमान राजा जानता था कि युद्ध से केवल विनाश और जीवन की हानि होगी। इसलिए, उसने दूसरे राजा से बात करने और समाधान खोजने का फैसला किया। उसने अपने दूत को दूसरे राज्य में भेजा, और कई दौर की बातचीत के बाद, आखिरकार उन्हें एक समाधान मिला जिसने दोनों राज्यों को संतुष्ट किया।"

रवि के दादाजी ने आगे कहा, "इसी तरह, आप और राधा भी अपनी समस्या का समाधान ढूंढ सकते हैं। लड़ने के बजाय, आप एक-दूसरे से बात क्यों नहीं करते और ऐसा समाधान खोजने की कोशिश क्यों नहीं करते जो आप दोनों के लिए काम करे?" रवि ने अपने दादाजी की बात के बारे में सोचा और राधा से बात करने का फैसला किया। वे दोनों एक साथ बैठे और अपनी भावनाओं के बारे में बात की। उन्होंने लड़ाई के लिए माफ़ी मांगी और उस खिलौने को साझा करने का एक तरीका ढूंढ लिया जिस पर उन्होंने बहस की थी। उनकी दोस्ती फिर से बहाल हो गई, और उन्होंने महसूस किया कि बात करना और एक समाधान खोजना लड़ने और एक दोस्त को खोने से कहीं बेहतर था। उस दिन से, उन्होंने एक-दूसरे से बात करने और समस्या होने पर समाधान खोजने का वादा किया और इसलिए, रवि और राधा ने गाँव का पता लगाना जारी रखा और साथ में मस्ती की, लेकिन इस बार, वे जानते थे कि वे किसी भी समस्या को हल कर सकते हैं जो बातचीत करके और उन दोनों के लिए काम करने वाले समाधान को खोजकर उनके सामने आए।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. राजा ने समाधान के लिए क्या रास्ता चुना ?
2. इस रास्ते का चुनाव करने का क्या तात्पर्य था ?
3. रवि और राधा की लड़ाई का क्या कारण था ,क्या उनमें सुलह हुई ?
4. किसी भी टकराव या मतभेद को किस तरह से सुलह में बदल सकते हैं ?

दोस्ती का इम्तेहान

अरुण और तौफीक ज़ेवियर कालेज के बड़े मेधावी छात्र थे और दोनों के बीच पढ़ाई में कड़ी प्रतियोगिता होती थी और दोनों अच्छे दोस्त भी थे विज्ञान की प्रयोगशाला में एक सवाल के जवाब में दोनों के बीच में बहस हो गयी और यह इस बहस से दोनों की दोस्ती में दरार आ गयी और उनमें बीच बातचीत भी बंद हो गयी। उनकी कक्षा में विज्ञान के शिक्षक जॉन सर ने जब इस बात की मालूमात की तब उन्हें सारी कहानी का पता चला।



उन्होंने दोनों को बुलाकर उनसे इस नाराज़गी का कारण पुछा और दोनों को सुना तब जाकर उन्हें लगा की यह दोनों बिना किसी ठोस वजह के आपस में एक दुसरे से बात नहीं कर रहे। उन्होंने दोनों को समझाया की तुम दोनों को आपस में मेल मिलाप से रहना चाहिए। तुम दोनों इस स्कूल के होनहार छात्र हो और तुम दोनों की इस स्कूल में मिसाल दी जाती है अगर तुम लोगो इस तरह से रहोगे तो इस स्कूल में प्रेम और भाईचारे की मिसाल खत्म हो जाएगा इसलिए आपस में सुलह करो और सारे मनमुटाव भूलकर आपस में बात करो। अपने गुरु की बात मानकर उन दोनों ने मुलाकात की और बात कर के एक दूसरे जो गले लगाया और फिर से प्रेम से रहने लगे।

कहानी का सबक

इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिली की दो पक्षों में किसी भी प्रकार का तनाव क्यों न हो जाए बातचीत के द्वारा और किसी की सलाह पर सुलह संभव है। सुलह बातचीत के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

दोस्ती- कविता

दोस्ती -ना कभी इम्तेहान लेती है ,
ना कभी इम्तेहान देती है।
दोस्ती तो वह है
जो बारिश में भीगे चेहरे भी ,
आंसुओं को पहचान लेती है।
आज रब से मुलाकात की ,
थोड़ी सी आपके बारे में बात की
मैंने कहा क्या दोस्त है

क्या किस्मत पाई है
रब ने कहा संभाल के रखना
मेरी पसंद जय जो तेरे हिस्से में आयी है
दिन बीत जाते है सुहानी यादें बनकर
बातें रह जाती है कहानी बनकर
पर दोस्त तो हमेशा दिल के करीब रहेंगे
कभी मुस्कान तो कभी आँखों का पानी बनकर



-हरीवंश राय बच्चन

भारत की आज़ादी के स्वतंत्रता सेनानियों की अमर गाथा



भारत की आज़ादी में सभी धर्म और जाति के लोगों के अहम् भूमिका रही है। स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के दौरान एकता द्वारा काम करने वाले हिंदू और मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानियों के उदाहरण।



मौलाना हसरत मोहानी और लाला लाजपत राय ने असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन सहित विभिन्न आंदोलनों में लाला लाजपत राय के साथ मिलकर काम किया, हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया और सभी भारतीयों के अधिकारों की वकालत की।



राजेंद्र प्रसाद और मौलाना अबुल कलाम ने अपने धार्मिक मतभेदों के बावजूद घनिष्ठ संबंध बनाए रखा, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सहयोग किया और एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में भारत के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



खान अब्दुल गफ्फार खान और विनोबा भावे ने गहरी दोस्ती और आपसी सम्मान साझा किया। उन्होंने अहिंसा को बढ़ावा देने, हाशिए पर रहने वाले समुदायों के उत्थान और हिंदुओं और मुसलमानों के बीच की खाई को पाटने के लिए मिलकर काम किया।

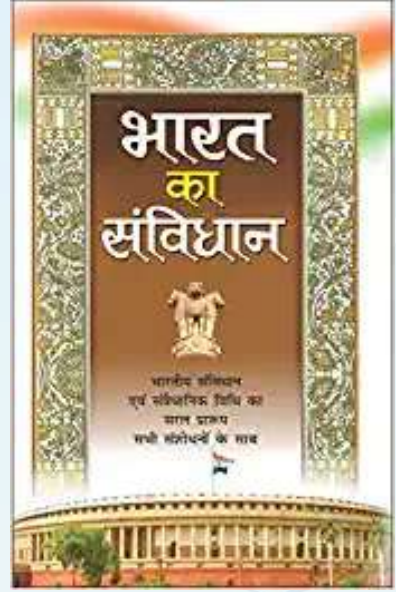


हिंदू, ईसाई सिख और मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानियों ने न केवल साझा लक्ष्यों को साझा किया बल्कि एक संयुक्त भारत के लिए विश्वास, सम्मान और एक साझा दृष्टिकोण पर निर्मित गहरे व्यक्तिगत संबंध भी बनाए। उनके सहयोगी प्रयासों ने प्रदर्शित किया कि स्वतंत्रता के लिए लड़ाई ने धार्मिक सीमाओं को पार कर लिया, एक स्वतंत्र और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के सपने को साकार करने में एकता और समावेशिता के महत्व पर जोर दिया।

"हम, भारत के लोग, भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए और उसके सभी नागरिकों को सुरक्षित करने के लिए पूरी तरह से संकल्पित हैं:

न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक; विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता; स्थिति और अवसर की समानता; और उन सभी के बीच प्रचार करने के लिए व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता;

हमारी संविधान सभा में, नवंबर 1949 के छब्बीसवें दिन, इस संविधान को अपनाने, अधिनियमित करने और खुद को देने के लिए।"



प्रस्तावना संप्रभुता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सहित भारतीय संविधान के मूल मूल्यों और आकांक्षाओं पर प्रकाश डालती है। यह एक न्यायपूर्ण, समावेशी और सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण के लिए भारतीय लोगों की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

प्रश्नोत्तरी



1. हिंसक व्यवहार के परिणाम अपमान, संकट और अवसाद जैसी मानसिक चोटों को भी जन्म देता है। हाँ / ना
2. हिंसा कितने प्रकार की है कृपया नाम बताइये ।
3. सांप्रदायिक हिंसा से आप क्या समझते है।
4. सांप्रदायिक हिंसा से पीड़ित रोहन के जीवन पर उसका क्या प्रभाव पड़ा ।
5. कहानी के पात्र अकरम किस हिंसा का शिकार हुए।
6. सांप्रदायिक हिंसा से पीड़ित बच्चों पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ।
7. टकराव से आप क्या समझते है और यह कितने प्रकार का होता है ।
8. टकराव से किस प्रकार से निपटा जा सकता है।
9. क्या किसी भी प्रकार के तनाव को बातचीत के द्वारा टाला जा सकता है अगर हाँ तो उसको करने के लिए क्या कदम उठाने पड़ते है।
10. भारत के संविधान का क्या संकल्प है।

प्रथम तीन विजेताओं को पुरुस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

☎ इमरजेंसी हेल्पलाइन नंबर

1. चाइल्ड हेल्पलाइन-1098
2. पुलिस -112
3. महिला हेल्पलाइन -1090
4. आशा ज्योति केंद्र -181
5. अग्निशामक -101
6. मुख्यमंत्री हेल्पलाइन -1076
7. एम्बुलेंस-108
8. साइबर क्राइम हेल्पलाइन -1930

कारितास इंडिया संवाद कार्यक्रम पार्टनर्स



facebook.com/caritasindia



twitter.com/Caritas_India



youtube.com.com/users/CaritasIndia1962



कारितास इंडिया
सी बी सी आई सेंटर
1-अशोक प्लेस ,
नई दिल्ली -110001
www.caritasindia.org